

## समाजवाद से सर्वोदय की ओर : जयप्रकाश नारायण

डॉ० नीतू शर्मा

एसोसिएट प्रोफेसर, आई० टी० कॉलेज, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

### प्रस्तावना

समाजवादी आन्दोलन का लक्ष्य आर्थिक और सामाजिक शोषण की समस्त स्थितियों को समाप्त कर ऐसी समाज—व्यवस्था की स्थापना करना रहा है जिसका मूल आधार समस्त जनता के लिए आर्थिक और सामाजिक न्याय हो। भारत में समाजवाद का विकास सामाजिक तथा आर्थिक पुनर्निर्माण की एक योजना के रूप में ही नहीं हुआ बल्कि वह क्रूर विदेशी साम्राज्यवाद के बन्धनों से राजनीतिक मुक्ति की एक विचारधारा के रूप में भी विकसित हुआ। भारत के समाजवादी आन्दोलन से जुड़े हुए प्रमुख नाम हैं : आचार्य नरेन्द्र देव, जयप्रकाश नारायण, डॉ० राम मनोहर लोहिया, अशोक मेहता, मीनू मसानी, जवाहर लाल नेहरू, डॉ० सम्पूर्णानन्द, अच्युत पटवर्धन, कमला देवी चटोपाध्याय आदि। 1914 से ही भारत के ये राष्ट्रीय नेता इस दिशा में विचार करने लगे थे कि हमारा लक्ष्य एक न्यायपूर्ण आर्थिक सामाजिक व्यवस्था होना चाहिए।

जय प्रकाश नारायण 1929 में अमेरिका से वापस लौटे थे। कुछ ही समय बाद जब जय प्रकाश जी ने 'अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के श्रम शोध अनुभाग' का कार्य संभाला तो उनकी मुलाकात आचार्य नरेन्द्र देव से हुई। इन दोनों ने बाद में कई और मित्रों को जोड़कर कांग्रेस समाजवादी पार्टी बनायी। जयप्रकाश जी आधुनिक लोकतान्त्रिक संसदीय व्यवस्था के कटु आलोचक थे। वे स्वयं एक श्रेष्ठ राजनीतिज्ञ थे। उन्होंने राजनीति का पूरा अनुभव किया था। वे राजनीति का खोखलापन, आदर्शहीनता और भ्रष्टाचार देख रहे थे। राजनीति लोक, लोक सेवा से विरत हो गयी है। वह केवल राज चाहती है। अधिकार चाहती है किन्तु अधिकार के स्रोतों का नाश करती है। अधिकार तो गाँव में है। सामान्यजन में है। इसलिए जयप्रकाश जी ने अपना मुख्य क्षेत्र गाँवों को बनाया। जयप्रकाश कहते हैं — 'सत्ता के लिए दलीय होड़ से मुक्त होकर राजनीति का चरित्र नैतिक हो जाता है और तब वह राजनीति न रहकर लोक नीति बन जाती है। राजनीति में राज्य अपने हित में नीति बनाता है और अपनी सैनिक शक्ति से उसे जनता द्वारा मनवाता है। इसके विपरीत लोकनीति में नीति लोक के द्वारा निर्धारित होती है, और तंत्र उसके अनुकूल बनता है। कहने को राजनीति दोनों हैं, किन्तु पहली राजनीति दूसरी से बिल्कुल भिन्न है। जहाँ तक राजनीति राज्यवादी है, अधिकार वाद की ओर ले जाती है, वहाँ दूसरी राजनीति तंत्र पर लोक का तथा लोक पर नैतिक मूल्यों का अंकुश स्थापित करती है। इस प्रकार स्वयं राजनीति राज्य निष्ठ और तंत्र निष्ठ न रहकर लोकनिष्ठ और जीवननिष्ठ बन जाती है। अर्थात् समाज के विकास की वह एक विधायक शक्ति बन जाती है। यह राजनीतिक सेवा है, प्रचलित राजनीतिक सत्ता के लिए शीत गृहयुद्ध है, शोषण और दमन की प्रक्रिया है।' (जयप्रकाश पृ० 118)

जयप्रकाश ने संविधान और लोकतंत्र में भेद किया। संविधान में सत्ता कानून के हाथ में होती है किन्तु लोकतंत्र की सत्ता लोक के हाथ में होती है। संविधान में प्रतिनिधि को वापस बुलाने की व्यवस्था नहीं है किन्तु लोकतंत्र और भ्रष्ट प्रतिनिधियों को पाँच वर्षों के भीतर वापस बुलाने को समर्थन करता है। जयप्रकाश ने

लोकतंत्र में जनता के तीन अधिकारों की स्वीकृति दी — 1. प्रतिनिधि को वापस बुलाना, 2. राजनीतिक दलों से अलग जनता का उम्मीदवार खड़ा करना। 3. सरकार से मुक्त किन्तु उसके सहयोग से गाँव-गाँव, नगर-नगर, का जीवन चलाने की स्वायत्तता। जयप्रकाश जी राज्यशक्ति, लोकशक्ति और नैतिक शक्ति को मिलाकर चलते थे। जयप्रकाश कहते हैं — 'शुभ आज भी यह मानता हूँ कि सत्ता पर अंकुश रखने के लिए और उसे नैतिक आदर्शों की ओर ले जाने के लिए यह आवश्यक है कि थोड़े प्रभावशाली लोग सत्ता से दूर रहकर जनता के बीच काम करते हैं। संगठित जनता ही शासकीय सत्ता पर अंकुश रख सकेगी और सत्ता से अलग रहकर काम करने वाले लोग ही जनता को सच्चा नेतृत्व दे सकेंगे।' (जयप्रकाश पृ० 498)

समाजवादी होने के नाते जयप्रकाश नारायण ने इस बात को स्पष्ट किया कि सामाजिक और आर्थिक क्षेत्रों में व्याप्त असमानता का मुख्य कारण यह है कि कुछ लोगों का उत्पादन के साधनों पर बहुत अधिक नियंत्रण है और बहुसंख्यक लोग उनसे वंचित हैं। इसलिए उनका आग्रह है कि समाज ऐसी व्यवस्था करे जिससे मनुष्य की शक्ति और क्षमताओं को निष्फल करने वाली आर्थिक बाधाएँ दूर हो सकें। जयप्रकाश जी केवल राजनीतिक स्वतन्त्रता को ही पर्याप्त नहीं समझते, वे लिखते हैं — 'हिन्दुस्तान में गरीबी नहीं है। एक तरफ भुखमरी है, दूसरी ओर दौलत की मौज है। वर्तमान समाज के मूल रोग यानी आर्थिक और सामाजिक विषमता और उसके कारण हिन्दुस्तान में भी मौजूद है। यहाँ भी मुट्ठी भर लोग ज्यादा लोगों को चूस रहे हैं। समाजवाद के बिना राजनैतिक और आर्थिक स्वतन्त्रता एवं समानता सम्भव नहीं। नागरिक स्वतन्त्रता एवं साधनों की सफलता के अभाव में व्यक्ति अपने विकास का समुचित अवसर नहीं पा सकता। जबतक व्यक्ति को विकास के समुचित अवसर नहीं मिलेंगे। समाजवाद की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

एक समाजवादी मनीषी के रूप में जयप्रकाश नारायण को राजनीति के आर्थिक आधारों का स्पष्ट ज्ञान था। महात्मा गाँधी उन्हें समाजवाद का बड़ा भारतीय विद्वान मानते थे। वे समाजवाद को सामाजिक-आर्थिक पुनर्निर्माण का एक सम्पूर्ण सिद्धान्त मानते थे। उन्होंने करौंची कांग्रेस के मूल अधिकारों से सम्बन्धित प्रस्ताव की आलोचना की थी। वे भूमिकर को घटाने, व्यय को कम करने तथा उद्योगों के राष्ट्रीयकरण के पक्ष में थे। भूमिहीनों की समस्या को सुलझाने के लिए 'भूदान आन्दोलन' प्रारम्भ किया गया। जयप्रकाश नारायण इस आन्दोलन का अभिन्न हिस्सा थे उन्होंने 'विनोबा भावे' के इस आन्दोलन में अपना योगदान दिया तथा पद यात्राएँ की। वे भूमि वितरण की समीक्षा को अहिंसात्मक साधनों द्वारा हल करने के पक्ष में थे। भूदान के विषय में वे कहते हैं — 'श्रृंजीवाद के प्रारम्भ में उद्योग पतियों में स्वतन्त्रता थी। स्वतन्त्र व्यापार चलता था लेकिन आगे बढ़कर औद्योगिक एकाधिकार समाप्त होने लगा। भूदान यज्ञ में जितनी चेतना भूमिपतियों में आती है। उससे कहीं अधिक जागरण भूमिहीनों में हो रहा है। यही पूँजीवाद के अन्त का रास्ता है। इसीलिए वह इस सामाजिक एवं बौद्धिक क्रान्ति की बागडोर

नवयुवकों को सौपना चाहते हैं।” वे चाहते थे कि गाँवों को स्वायत्त तथा स्वावलम्बी इकाइयाँ बनाया जाए। इसके लिए भूमि-सम्बन्धी कानूनों में आमूल सुधार करने की आवश्यकता थी। भूमि पर वास्तविक किसान का स्वामित्व होना चाहिए। उन्होंने सहकारी खेती का समर्थन किया। उन्होंने कहा-

“स्वास्तविक समाधान यह है कि उन सभी निहित स्वार्थों का उन्मूलन कर दिया जाए जिनसे किसी भी रूप में भूमि जोतने वालों का शोषण होता है। किसानों के सभी ऋणों को निरस्त कर दीजिए, जोतो को एकत्र करके सहकारी और सामूहिक फार्मों की तथा राजकीय और सहकारी ऋण व्यवस्था तथा हाट व्यवस्था और सहकारी सहायक उद्योगों की स्थापना कीजिए उन्होंने सहकारी प्रयत्नों के द्वारा ही कृषि तथा उद्योग के बीच सन्तुलन पर बल दिया।”

जयप्रकाश नारायण ने साम्प्रदायिकता और जाति का विरोध भी समानरूप से किया उनका मानना था कि साम्प्रदायिकता का उचित और अहिंसक समाधान आवश्यक है। वरना यह जहर धीरे-धीरे भारत की काया को नष्ट कर देगा। जातियों और सम्प्रदायों की भावात्मक अस्मिता थोड़ी भी हवा पाकर जल उठती है। इसे रोकती है। राष्ट्रचेतना। अर्थचेतना नहीं। किन्तु राष्ट्रचेतना बनाना और उसे बनाए रखना एक कठिन और लगातार जागरूकता का काम है। जयप्रकाश ने इस सम्पूर्ण क्रान्ति में इन समस्याओं पर विचार किया। वे कहते हैं - “शजातिवाद हमारे लिए अभिशाप है हमारी आज की राजनीति ने भी जातिप्रथा को मजबूत बनाने का काम किया है। हमें मनुष्य-मनुष्य के बीच भेद मिटाने है। जात-पात, छूत-अछूत सब कुछ समाप्त करना है।” (जयप्रकाश नारायण पृ० 588)

जयप्रकाश की मूल दृष्टि मानवता वादी हैं। अतः वे पिछड़े का अर्थ मुख्यतः आदिवासियों और हरिजन से लेते हैं। वे कहते हैं - “आदिवासी अभी बहुत पिछड़े रह गये हैं। हरिजन आज भी अलग बस्तियों में रहते हैं। अस्पृश्यता अथवा छुआछूत आज अपने भयंकर रूप में मौजूद है। ..... हमें मनुष्य-मनुष्य के बीच के भेद मिटाने है। ..... समाज की सब कुशितियों, कुरिवाजों और कुसंस्कारों के विरुद्ध भी संघर्ष की आवश्यकता है।” (जयप्रकाश पृ० 588)

जयप्रकाश अपने सामने एक समाज को देखते थे जो पूर्णतः हिंसामुक्त और शान्तिवाला हो। जो सादा जीवन और उच्च विचार से ही सम्भव है। इसलिए जयप्रकाश के विचारों में व्यावहारिकता का पक्ष मुख्य है। उन्होंने इन्हीं आधारों पर युवकों को जगाया। उनका नेतृत्व किया और राज्य सत्ता बदली। जयप्रकाश ने समग्र क्रान्ति के लिए युवकों का आह्वान किया। उस समय गाये जाने वाले गीतों में एक प्रसिद्ध पंक्ति है - “जयप्रकाश का बिगुल बजा है, जाग उठी तरुणाई है, तिलक लगाने तुम्हें जवानों, क्रान्ति द्वार पर आई है” शदिनकर ने जयप्रकाश को “तरुण देश का सेनानी कहा। जयप्रकाश ने अपनी कविता में कहा “यह विफल जीवन शत-शत धन्य होगा, यदि समान धर्मा प्रिय तरुणों का कंटकाकीर्ण मार्ग यह कुछ सुगम बना जावे।” इस रूप में जयप्रकाश ने तरुण शान्ति सेना का गठन किया। उनकी स्पष्ट धारणा थी कि जब तक सार्वजनिक हितों के लिए व्यक्तिगत हितों का बलिदान नहीं करते, आवश्यकताओं को सीमित करने की ओर प्रवृत्त नहीं होते, राजनैतिक व आर्थिक क्षेत्रों में विकेन्द्रीकरण नहीं लाते तथा ग्रामों को स्वशासन और आत्मनिर्भर नहीं बनाते तब तक सच्चा लोकतन्त्र स्थापित नहीं होता। उनके शब्दों में- “सबसे पहली बात यह है कि लोकतन्त्र की समस्या मूलतः और सर्वोपरि एक नैतिक समस्या है। लोकतन्त्रों के लिए संविधानों, शासन प्रणालियों और दलों एवं चुनावों - इन सब बातों का महत्व है, पर जब तक जनता में समुचित नैतिक और आध्यात्मिक गुणों का विकास नहीं हो जाता तब तक संविधान एवं राजनैतिक प्रणालियाँ लोकतन्त्र को सफल

नहीं बना सकती।” जयप्रकाश के अनुसार लोकतन्त्र की सफलता के लिए सत्य, अहिंसा एवं प्रेम नागरिकों में अन्याय एवं दमन के प्रतिरोध का साहस, सहयोग और सहअस्तित्व की भावना दूसरे के विचारों के प्रति सहिष्णुता, कर्तव्य परायणता, उत्तरदायित्व की भावना, भ्रातृत्व और समानता की भावना में पूर्ण विश्वास एवं सीमित आवश्यकताएं आवश्यक है।

जयप्रकाश सर्वोदयी विचारधारा से अत्यधिक प्रभावित थे। वे राज्य की बाध्यता मूलक शक्ति के विरुद्ध थे। वे समाजवाद से सर्वोदयी चिन्तन तक दृष्टिपात करते हुए कहते हैं - “समाजवाद मानवजाति को स्वतन्त्रता, समानता, शान्ति और बंधुत्व के उत्कृष्ट लक्ष्य तक नहीं ले जा सकता। ..... जब तक समाजवाद सर्वोदय में रूपान्तरित नहीं हो जाता, वे लक्ष्य इसकी पहुँच से बाहर रहेंगे।” जयप्रकाश जी ने राजनीति से अपने को पृथक कर सर्वोदय के माध्यम से समाजसेवा में लगा दिया। उन्होंने स्वयं को सक्रिय राजनीति से पृथक तो कर लिया लेकिन राजदर्शन से नहीं। उनके विचारों का आधार सर्वोदयी दर्शन था। वे ऐसे समाज की कल्पना करते थे जो सहकारिता, आत्मअनुशासन और उत्तरदायित्व की भावना से परिपूर्ण हों। वे ग्राम स्वराज्य को भारतीय समाज की रीढ़ मानते थे। सर्वोदयी आन्दोलन के झुकाव की ओर संकेत उनके इस कथन से मिलता है - “शुरुआत में निंदित सांघनों से निंदित साध्यों की उत्पत्ति हुई। विशेष रूप से जब अपने विरोधी नेताओं को समाप्त करने की प्रक्रिया चल रही थी, उस बीच भयंकर से भयंकर अपराध करने के लिए घृणित साधनों का उपयोग किया गया। मार्क्सवादी क्रान्तिकारी नीति के विरुद्ध मेरा मन बगावत कर उठा।” इस प्रकार जयप्रकाश जी का नैतिक दृष्टिकोण उन्हें पाश्चात्य समाजवाद से दूर सर्वोदयी चिन्तन की ओर ले गया।

### सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. जयप्रकाश नारायण, Towards Struggle - युसुफ मेहर अली द्वारा सम्पत्ति, पद्मा पब्लिकेशन्स, बम्बई, 1946)
2. भारत में समाजवाद : डॉ० लोहिया
3. समाजवाद: आचार्य नरेन्द्र देव, डॉ० लोहिया और जयप्रकाश जी की दृष्टि में
4. भारतीय सामाजिक चिन्तन एवं राष्ट्रीय आन्दोलन: डॉ० हरदयाल जायसवाल।
5. आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन : डॉ० वी० पी० वर्मा
6. युग और विचार: आचार्य नरेन्द्र देव - सम्पादक - जगदीश चन्द्र दीक्षित
7. भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन: डॉ० उर्मिला शर्मा, डॉ० पाण्डेय शशिभूषण ‘शीतांशु’